



ऑनलाइन बॉण्ड प्लेटफॉर्म प्रदाताओं हेतु नियामक ढाँचा

प्रलिस के लिये:

सेबी, ऑनलाइन बॉण्ड प्लेटफॉर्म प्रदाता, बॉण्ड ऋण।

मेन्स के लिये:

ऑनलाइन बॉण्ड प्लेटफॉर्म प्रदाताओं के लिये एक नियामक ढाँचे की आवश्यकता।

चर्चा में क्यों?

[भारतीय प्रतभित और वनमिय बोरड \(सेबी\)](#) ने ऑनलाइन बॉण्ड प्लेटफॉर्म प्रदाताओं के लिये एक नियामक ढाँचा पेश किया है ताकि उनके संचालन को सुव्यवस्थित किया जा सके।

- **ऑनलाइन बॉण्ड प्लेटफॉर्म प्रदाता (OBPPs)** भारत में नगिमति कंपनयिँ होंगी और उन्हें स्टॉक एक्सचेंज के डेबट सेगमेंट में स्टॉक ब्रोकर के रूप में खुद को पंजीकृत करना होगा।

वनियामक ढाँचे की आवश्यकता:

- **नए नियम:**
 - स्टॉक एक्सचेंज के डेबट सेगमेंट में स्टॉक ब्रोकर के रूप में पंजीकरण करने के बाद एक इकाई को OBPP के रूप में कार्य करने के लिये एक्सचेंज में आवेदन करना होगा।
 - **नए नियमों में ऑनलाइन बॉण्ड प्लेटफॉर्म प्रदाता के रूप में कार्य करने के लिये सेबी से स्टॉक ब्रोकर के रूप में पंजीकरण प्रमाणपत्र प्राप्त करना अनिवार्य है।**
 - जो 9 नवंबर 2022 से पहले पंजीकरण प्रमाणपत्र के बिना ऑनलाइन बॉण्ड प्लेटफॉर्म प्रदाता के रूप में कार्य कर रहे हैं, वे तीन महीने की अवधि के लिये ऐसा करना जारी रखेंगे।
 - लोगों को समय-समय पर सेबी द्वारा नरिदषिट पंजीकरण की शर्तों का पालन करना होगा।
 - सभी संस्थाओं को न्यूनतम प्रकटीकरण आवश्यकताओं का अनुपालन सुनशिचति करना होगा। उन्हें अपने हतितों संबंधी टकराव के सभी मामलों का भी खुलासा करना होगा, जो संबंधित पक्षों के साथ उनके लेनदेन या लेनदेन से उत्पन्न होते हैं।

बॉण्ड बाज़ार

- **बॉण्ड:**
 - **बॉण्ड कंपनयिँ द्वारा जारी कॉर्पोरेट ऋण की इकाइयों हैं और व्यापार योग्य संपत्त के रूप में प्रतभितकृत हैं।**
 - एक बॉण्ड को एक नशिचति आय साधन के रूप में संदर्भित किया जाता है क्योंकि बॉण्ड पारंपरिक रूप से देनदारों को एक नशिचति ब्याज दर (कूपन) का भुगतान करते हैं।
 - परविरत्नीय या अस्थायी ब्याज दरें भी अब काफी आम हैं।
 - बॉण्ड की कीमतें ब्याज दरों के साथ वपिरीत रूप से सहसंबद्ध होती हैं: जब दरें बढ़ती हैं, तो बॉण्ड की कीमतें गरिती हैं और जब दरें गरिती हैं, तो बॉण्ड की कीमतें बढ़ती हैं।
- **बॉण्ड के प्रकार:**
 - **परविरत्नीय बॉण्ड:**
 - नयिमति बॉण्ड के वपिरीत जो बॉण्ड परपिक्रवता पर वमिचति होते हैं उनमें एक परविरत्नीय खरीदार को जारीकर्त्ता कंपनी के बॉण्ड को शेयरों में बदलने का अधिकार या दायतिव देता है।
 - इसकी एक नशिचति अवधि होती है और **पूर्व नरिधारति अंतराल पर समय-समय पर ब्याज का भुगतान किया जाता है।**
 - **नशिचति कूपन दर बॉण्ड:**

- इस प्रकार के बॉण्ड में ब्याज जारी करने की तारीख से तय किया जाता है। अधिकांश कॉर्पोरेट और सरकारी बॉण्ड नश्चिति कूपन दर के होते हैं जो ब्याज या कूपन वमोचन की तथितिक वार्षिक, अर्द्ध-वार्षिक, त्रैमासिक या मासिक रूप से प्रदान किये जाते हैं।
- **फ्लोटिंग कूपन रेट बॉण्ड (FRB):**
 - इन बॉण्डों में परपिक्वता की तारीख तक कूपन दर में पूर्वनिर्धारित समय पर उतार-चढ़ाव होता रहता है। यहाँ ब्याज दर बेंचमार्क पर निर्भर करती है जिसका पालन वह प्रत्येक कूपन भुगतान में कूपन दर निर्धारित करने के लिये करता है। FRB बॉण्ड के मामले में कूपन दर **टी-बलि यील्ड** पर निर्भर करती है।
- **शून्य कूपन बॉण्ड:**
 - ये वे बॉण्ड होते हैं जहाँ जारीकर्त्ता परपिक्वता तथितिक धारक को कोई कूपन भुगतान प्रदान नहीं करता है। यहाँ बॉण्ड अंकित मूल्य राशि से कम और परपिक्वता की तारीख पर जारी किये जाते हैं। बॉण्ड को अंकित मूल्य की राशि पर भुनाया जाता है। यहाँ रडिम्पशन प्राइस (रडिम्पशन प्राइस वह मूल्य है जिस पर जारी करने वाली कंपनी अपनी परपिक्वता तथिति से पहले नविशकों से बॉण्ड की पुनर्खरीद करेगी) और इश्यू प्राइस के बीच का अंतर एक नविशक के लिये रटिर्न है। भारत में ट्रेजरी-बलि शून्य-कूपन बॉण्ड हैं।
- **संचयी कूपन दर बॉण्ड:**
 - ये बॉण्ड कूपन दर के साथ जारी किये जाते हैं लेकिन कूपन का भुगतान रडिम्पशन/मोचन के समय किया जाता है। आमतौर पर कॉर्पोरेट्स इस तरह के बॉण्ड जारी करते हैं।
- **मुद्रास्फीति अनुक्रमित बॉण्ड:**
 - ये बॉण्ड मुद्रास्फीति से सुरक्षा प्रदान करते हैं। यह मुख्य रूप से सरकार द्वारा जारी किया जाता है। यहाँ कूपन रेट मुद्रास्फीति दर पर निर्भर है। आमतौर पर कूपन दर मुद्रास्फीति दर पर प्रदान की गई अतिरिक्त दर के बराबर होती है।
- **सॉवरेन गोल्ड बॉण्ड (SGB):**
 - भारतीय रज़िर्व बैंक के अनुसार, **SGBs** सरकारी प्रतभूतियाँ हैं जिन्हें ग्राम सोने में दर्शाया गया है।
 - ये भौतिक सोना धारण करने के विकल्प हैं। नविशकों को नरिगम मूल्य का भुगतान नकद में करना होता है और परपिक्वता पर बॉण्ड को नकद में भुनाया जाएगा।
- **बॉण्ड बाज़ार:**
 - बॉण्ड बाज़ार मोटे तौर पर ऐसे बाज़ार का वर्णन करता है जहाँ नविशक **ऋण प्रतभूतियाँ** खरीदते हैं जो सरकारी संस्थाओं या नगिमों द्वारा बाज़ार में लाई जाती हैं।
 - राष्ट्रीय सरकारें आमतौर पर बॉण्ड से प्राप्त आय का उपयोग बुनियादी ढाँचे में सुधार और ऋण चुकाने के लिये करती हैं।
 - कंपनियाँ संचालन को बनाए रखने, अपने उत्पाद को बढ़ाने या अपनी शाखाओं का विस्तार करने हेतु आवश्यक पूंजी जुटाने के लिये बॉण्ड जारी करती हैं।
 - बॉण्ड या तो **प्राथमिक बाज़ार में जारी किये जाते हैं, जो नए ऋण को रोल आउट करते हैं** या द्वितीयक बाज़ार में कारोबार करते हैं, जिसमें नविशक दलालों या अन्य तृतीय पक्ष के माध्यम से मौजूदा ऋण खरीद सकते हैं।
- **ऑनलाइन बॉण्ड प्लेटफॉर्म:**
 - SEBI के अनुसार, यह एक मान्यता प्राप्त स्टॉक एक्सचेंज या एक इलेक्ट्रॉनिक बुक प्रदान करने वाले प्लेटफॉर्म के अलावा इलेक्ट्रॉनिक प्रणाली है, जिस पर ऋण प्रतभूतियों को सूचीबद्ध किया जाता है या सूचीबद्ध करने का प्रस्ताव दिया जाता है और लेन-देन किया जाता है।
 - ऑनलाइन बॉण्ड प्लेटफॉर्म प्रदाता का अर्थ है **ऐसा कोई भी व्यक्ति जो इस तरह के प्लेटफॉर्म का संचालन करता है या प्रदान करता है।**

UPSC सविलि सेवा परीक्षा वगित वर्ष के प्रश्न (PYQ)

प्रश्न. भारत के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये: (2021)

1. खुदरा नविशक डीमैट खातों के माध्यम से प्राथमिक बाज़ार में 'राजकोष बलि (ट्रेजरी बलि)' और 'भारत सरकार के ऋण बॉण्ड' में नविश कर सकते हैं।
2. 'बातचीत से तय लेन-देन प्रणाली-आर्डर मिलान प्रणाली (नगिोशिएटेड डीलिंग सिस्टम-ऑर्डर मैचिंग)' भारतीय रज़िर्व बैंक का सरकारी प्रतभूति व्यापारिक मंच है।
3. 'सेंट्रल डिपॉज़िटरी सर्वसिज़ लमिटिड' का भारतीय रज़िर्व बैंक और बंबई स्टॉक एक्सचेंज द्वारा संयुक्त रूप से प्रवर्तन किया जाता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

- (a) केवल 1
- (b) केवल 1 और 2
- (c) केवल 3
- (d) केवल 2 और 3

उत्तर: (b)

व्याख्या:

- RBI ने खुदरा नविशकों को सीधे रज़िर्व बैंक के माध्यम से सरकारी प्रतभूत बाज़ार को प्राथमिक और माध्यमिक दोनों तक ऑनलाइन पहुँच की अनुमति दी है। सरकारी प्रतभूतियों को सीधे RBI के माध्यम से खरीदने की सुविधा को **RBI रटिल डायरेक्ट** कहा जाता है। इसके तहत खुदरा नविशक समर्पित ऑनलाइन पोर्टल के माध्यम से RBI के साथ रटिल डायरेक्ट गलिट (RDG) खाता खोल सकते हैं और उसका रखरखाव कर सकते हैं। यह खाता एकल अथवा किसी अन्य खुदरा नविशक के साथ संयुक्त रूप से खोला जा सकता है।
- गलिट खाता बैंक द्वारा उन व्यक्तियों के लिये खोला जाता है जो सरकारी प्रतभूतियों और राजकोष बलि (ट्रेज़री बलियों) में नविश करना चाहते हैं। वास्तव में बैंक इन उपकरणों के लिये व्यक्तियों के नाम पर एक डीमैट खाता रखते हैं। **अतः कथन 1 सही है।**
- 'बातचीत से तय लेन-देन प्रणाली-आर्डर मलिन प्रणाली (नगोशिएटेड डीलिंग सिस्टम-ऑर्डर मैचिंग-NDSOM)' भारतीय रज़िर्व बैंक का सरकारी प्रतभूत वित्तीयारक मंच है। **अतः कथन 2 सही है।**
- सेंटरल डिपॉज़िटरी सर्विसेज़ लिमिटेड (CDSL), मुंबई में स्थित पहली सूचीबद्ध भारतीय केंद्रीय प्रतभूत डिपॉज़िटरी है। CDSL को BSE लिमिटेड द्वारा अग्रणी बैंकों जैसे स्टेट बैंक ऑफ़ इंडिया, बैंक ऑफ़ इंडिया, बैंक ऑफ़ बड़ौदा, HDFC बैंक तथा स्टैंडर्ड चार्टर्ड बैंक के साथ संयुक्त रूप से प्रवर्तित किया जाता है। **अतः कथन 3 सही नहीं है।**

अतः विकल्प (b) सही उत्तर है।

प्रश्न. भारतीय अर्थव्यवस्था के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये: (2020)

1. 'वाणिज्यिक पत्र (commercial paper)' अल्पकालीन प्रतभूत रिहति वचन पत्र है।
2. 'जमा प्रमाणपत्र' भारतीय रज़िर्व बैंक द्वारा किसी नगिम को नरिगत किया जाने वाला एक दीर्घकालीन प्रपत्र है।
3. 'कॉल मनी' एक अल्पकालिक वित्त है जिसका उपयोग इंटरबैंक लेन-देन केलिये किया जाता है।
4. 'शून्य-कूपन बॉण्ड ('Zero-Coupon Bonds') अनुसूचित वित्तीयारक बैंकों द्वारा नगिमों को नरिगत किये जाने वाले ब्याज-सहित अल्पकालीन बॉण्ड हैं।

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 4
- (c) केवल 1 और 3
- (d) केवल 2, 3 और 4

उत्तर: (c)

प्रश्न. परविरतनीय बॉण्ड के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये: (2022)

1. चूँकि बॉण्ड को इक्विटी के लिये बदलने का विकल्प है, परविरतनीय बॉण्ड अपेक्षाकृत कम ब्याज दर का भुगतान करते हैं।
2. इक्विटी के लिये बदलने का विकल्प बॉण्ड-धारक को बढ़ती उपभोक्ता कीमतों से सहलग्नता (इंडेक्सेशन) की मात्रा प्रदान करता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

- (a) केवल 1
- (b) केवल 2
- (c) 1 और 2 दोनों
- (d) न तो 1 और न ही 2

उत्तर: (c)

स्रोत: मटि